NH Notes - 04

चौधरी छोटूराम - ईमानदारी की मिसाल

यदि सेठ छाजूराम ना होते चौधरी छोटूराम भी ना होते| चौधरी छोटूराम उन्हे धर्मपिता कहकर पुकारते थे| चौधरी छाजूराम ने चौ छोटूराम को रहने के लिए और सुचारु रूप से अपना काम करने के लिए एक विशाल कोठी रोहतक मे 30 हजार की लागत से बनवाकर दी, जो आगे चल कर नीली कोठी के नाम से प्रसिद्ध हुई| यह कोठी आज भी अपने उसी स्वरूप मे रोहतक के बीचों बीच खड़ी हैं|

पंडित सेढुमल शर्मा, जो चौ छाजूराम के आजीवन मुंशी रहे, के हवाले से जानने को मिलता हैं कि इस कोठी कि तीस हजार रुपए कीमत चौ छोटूराम ने लौटानी थी, लेकिन वे जीवन भर नहीं लौटा पाए| जब एक बार पंडित सेढुमल शर्मा किसी कार्यवश रोहतक मे चौ छोटूराम से मिलने गए, तो उस समय वे पंजाब के मंत्री थे| लेकिन उन्होने मंत्री जी को लस्सी व प्याज के साथ रोटी खाते पाया| उस वक़्त उन्होने पंडित जी से कहा, "कैसे करूँ, हाथ बहुत तंग हैं| बाबू जी के पैसे नहीं दे पाया| मुझे इस बात की बहुत शर्म हैं| बाबू जी के मुझ पर बहुत एहसान हैं|"

तब पंडित सेढुमल ने कलकत्ता पहुँचने पर चौ छाजूराम को बताया था, "लोग न जाने क्या-क्या कहते हैं| उनका मानना हैं कि मंत्री बनने के बाद व्यक्ति बहुत अमीर हो जाता हैं| लेकिन मैं तो एक मंत्री को प्याज व लस्सी के साथ रोटी खाते देख कर आया हूँ| मैंने वहाँ सब पता लगाया कि मंत्री जी का पैसा कहा जाता हैं? पता चला कि वे ईमानदारी से केवल अपना वेतन लेते हैं और उसका भी ज़्यादातर हिस्सा जरूरतमंदों पर खर्च कर देते हैं| आप सुनकर हैरान होंगे, उनका हाथ इन दिनों तंग चल रहा हैं| कह रहे थे, बाबू जी के पैसे नहीं दे पा रहा , इसलिए शर्मिंदा हूँ|"

यह सब जानकार चौ छाजूराम भावुक हो गए| उन्होने कहा, "मुझे उस पर गर्व हैं| वह खरा हीरा हैं| ईमानदार लोग ऐसे ही तो हुआ करते हैं| उस पर ऐसी हजार कोठिया कुर्बान| मैंने समझाया था उसको कि पिता-पुत्र मे हिसाब-किताब नहीं हुआ करते| वह कोठी मैंने बनवाई ही उसके लिए हैं| उससे पैसे मांग ही कौन रहा हैं? वह हैं कि बेकार मे चिंता किए जा रहा हैं|

उन दिनों यहीं कोठी शक्ति का केंद्र बन चुकी थी| एक समय आया था, जब रोहतक की यह नीली कोठी को दिल्ली के बिड़ला भवन, इलाहाबाद के आनंद भवन, तथा अहमदाबाद के शाबरमती आश्रम के समान महत्व प्राप्त हो चुका था|

कहते हैं की चौ छाजूराम ने चौ छोटूराम के लिए सन 1939 मे लाहौर मे भी 70 हजार की लागत से एक कोठी बनवाई थी, जिसे शक्ति भवन नाम से जाना जाता था|

Courtesy: Rakesh Sangwan
Publisher: Nidana Heights

Dated: 05/11/2014